RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

मिथिला की लोकगाथाओं में वर्णित इतिहास का अध्ययन

कुमारी रिचा
शोधप्रद छात्रा, प्राचीन भारतीय इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर दरभंगा के सामाजिक विज्ञान संकाय

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20 February 2019

Keywords
मिथिला , मैथिली तिरहुत मिथिला लोकगीत लोरिकी, सलहेस गाथाए , दीनाभद्री

ABSTRACT

यह शोध इतिहासकारों को ऐतिहासिक मिथिला भूमि की लोकगाथाओं में वर्णित मिथिलांचल तिरहुत के गौरवशाली इतिहास को समझने की समीक्षा करता है। मिथिला की लोक गाथाएँ विश्व प्रसिद्ध देवीए भगवान राम की पत्नी और उनके पिता दार्शनिक राजा जनक की शानदार भूमि की एक प्रामाणिक यात्रा है। मैत्रेयी, मंडावी, गार्गी, महिला विद्वान, याज्ञबालक और विद्यापति जैसी महान विभूतियों के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है । मिथिला ज्ञान और सीखने की केंद्र भूमि है जो नेपाल तराई के साथ.साथ भारत के बिहार राज्य में भी स्थित है। मिथिला संस्कृति नेपाल की दूसरी महत्वपूर्ण संस्कृति है और इसकी दूसरी भाषा मैथिली है ,।मिथिला को गौरवगाथा यहां की लोकगाथाएं है । लोकगाथाओं में मुख्यत लोरीकी, सलहेस आदि का वर्णन इस शोध के सार्थकता को बल देता है ।

प्रस्तावना

मिथिला का इतिहास लगभग 3000 ईसा पूर्व से माना गया है । मिथिला का इतिहास बेहद गौरवशाली रहा है । हिन्दू धार्मिक ग्रंथो में सबसे पूर्व मिथिला का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में मिलता है तत्पश्चात रामायण एवं महाभारत जैसे ग्रन्थ भी मिथिला की ऐतिहासिक परिपाटी का बखान करते प्रतीत होते हैं। पौराणिक वेदों तथा पुराणों में प्राचीन मिथिला का विस्तार पूर्व में स्थित कोसी से पश्चिम में गंडक तट तक अर्थात 24 योजन (1 योजन = 24 कोस) माना गया है। दक्षिण में इसका विस्तार गंगा से प्रारंभ होकर उत्तर में स्थित उत्तरी हिमालय अर्थात 16 योजन तक बताया गया है। मिथिला राज्य मैथिली भाषी लोगों की जन्मभूमि है । मैथिली भाषा का सांस्कृतिक केंद्र वर्तमान भारत में मधुबन एवं दरभंगा और नेपाल के जनकपुर तक है। इस अध्ययन के उद्देश्यो की आपूर्ति हेतु मिथिला की लोकगाथाओं के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि प्राचीन काल से वर्तमान तक मिथिला के इतिहास की यात्रा कई भागो में बंटी हुई है जिसमें लोकदेवताओं, महापुरुषों की गाथाओं के साथ साथ लोक हित से जुड़ी ऐतिहासिक गाथाएं भी सम्मिलित है ।

चित्र . 1 प्राचीन भारत में मिथिला क्षेत्र को दर्शाता नक्शा

चित्र .2 ऐतिहासिक मिथिला क्षेत्र का विस्तार

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र मिथिला की लोकगाथाओं में निहित इतिहास अथवा गाथाओं का अध्ययन करना है। ताकि इसके आधार पर अध्ययन क्षेत्र मिथिला से संबंधित किवदंतियों एवं लोकगाथाओं का आंकलन किया जा सके ।

अध्ययन क्षेत्र - ऐतिहासिक मिथिला क्षेत्र

मिथिला प्राचीन भारत के एक क्षेत्र के रूप में विद्यमान रहा है जिसके ऐतिहासिक क्षेत्र के अन्तर्गत वर्तमान बिहार राज्य के तिरहुत, दरभंगा, मुंगेर , पुर्णिया, भागलपुर , झारखंड राज्य का संथाल परगना तथा नेपाल के तराई क्षेत्र के कुछ हिस्से सम्मिलित है । इस क्षेत्र की मुख्य भाषा मैथिली है प्राचीन महाकाव्यो में मिथिला का उल्लेख एक समृद्ध एवं संपन्न प्रदेश के रूप मै मिलता है जिसके निम्न अध्ययन बिंदु इस प्रकार है

रामायण काल के अनुसार .

वाल्मीकि रामायण के अनुसार मिथिला राज्य का संस्थापक निमी को माना गया है । मिथी राजा निमी के पुत्र माने गए हैं । मिथि का पुत्र कुष्ध्वज जनक को माना गया है । कुष्ध्वज जनक की पुत्री ही सीता को माना गया है। मिथिला का नामकरण राजा निमी के पुत्र मिथि के नाम पर हुआ है जिसका स्पष्ट उल्लेख रामायण महाकाव्य के अन्तर्गत मिलता है। (3)

पुराण के अनुसार

वायु पुराण एवं विष्णु पुराण मिथिलावन का उल्लेख करते है । इनके अनुसार निमी को विदेह प्रदेश का राजा कहा गया है जिसका संबंध इक्वांक्षु वंश से था। (4)(5)

महाभारत के अनुसार .

महाभारत में भीमसेन द्वारा विदेहराज जनक की पराजय का उल्लेख मिलता है। महाभारत के सभापर्व में भी मिथिला का उल्लेख हुआ है। जब भगवान कृष्ण पांडवो के साथ इस नगर में आए थे ।

जैन तीर्थ के अनुसार

जैन तीर्थ विविधकल्प सूत्र में मिथिला राज्य को जैन तीर्थ के रूप में उल्लेखित किया गया है।जिसके अन्य नाम जगती भी कहा

है । भगवान महावीर ने भी यहाँ निवास किया था ।

जातकों के अनुसार

जातकों के अनुसार यह नगर तीन ओर से गहरी खाइयों से घिरा हुआ था ।

उदक परिखा ;जल से भरी खाई

कर्दम परिखा ;कीचड़ से भरी खाई

शुष्क परिखा ;सूखी खाई

अष्टाध्यायी में पाणिनि ने मिथिला के संबंध में लिखा है .

मिथिला दयश्च, मथ इलच।

मैथ्यंते शत्रवो अस्याम।

अर्थात जहां शत्रु मर्दित किए जाए उसका नाम मिथिला है ।

डॉ सुभद्र झा के मुताबिक मिथिला शब्द का संबंध मिथ से है । उनके अनुसार वैशाली, विदेह और अंग को मिलाकर मिथिला का निर्माण हुआ है । (8)

व्हेनसांग कहते हैं कि गंगा का उत्तरीय भूभाग तीन हिस्सों में बंटा था . वैशाली , तीरभुक्ती और वृज्जी ।

वृज्जि का प्राचीन नाम ही मिथिला है ।

वृहदविष्णु पुराण में मिथिला खंड 500 ईसा पूर्व का वर्णन मिलता है

मिथिला क्षेत्र प्राचीन काल से ही अपनी एतिहासिक विरासत को समेटे हुए वर्तमान काल में भी उतना ही समृद्ध है जितना कि इसका उल्लेख वेदों पुराणों में पाया गया है । कालांतर में परिवर्तन के पश्चात कुछ लोक कहावतें , गाथाएं, किस्से ,साहित्य आदि आधुनिक युग में इसकी स्थिति एवं संस्कृति का उल्लेख करते हैं । इसी क्रम में मिथिला क्षेत्र की कुछ लोकगाथाएं अपने अधिकार क्षेत्र की व्यापकता और समृद्धता के लिए जानी जाती है । लोकगाथाओं की व्युत्पत्ति के विषय में यूरोप में दो मत प्रधान हैं एक मतानुसार समस्त लोक ही लोकगाथाओं के रचयिता हैं तथा द्वितीय मत के अनुसार व्यक्ति ही गाथाओं के रचयिता हैं। (1) मिथिला क्षेत्र की लोकगाथाओं का अध्ययन भी इसी मत की पुष्टि करता है । अधिकतर लोकगाथाओं में रचयिता का अभाव जबकि इसके विपरित स्वयं नायकों की निडर और साहसी छवि इन गाथाओं में मिथिलांचल के गौरव के प्रतीक चिन्ह कहे जा सकते है । लोकगाथाओं का इतिहास हमे पीछे की कड़ी से जोड़ता है अर्थात संस्कारो एवं परंपराओं और प्राचीन इतिहास से अवगत कराता है । लोकगाथाएं चाहे किसी भी लोकभाषा की हो या प्रांत की हो वह मूलतः जनता की आर्थिक और सामाजिक अवस्था पर प्रकाश डालते हैं।

विश्लेषणात्मक व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मिथिलांचल की लोक गाथाओं का अध्ययन महत्वपूर्ण अध्ययन है । लोकगाथाओं से संबंधित अध्ययन पूर्व में भी किए जाते रहे हैं । इनमें विद्यापति की मैथिली साहित्य एवं मिथिला के इतिहास को समर्पित जीवन सर ग्रियर्सन के मिथिला के प्रति प्रेम एवं कार्य ने ध्यान आकृष्ट किया है। ईसवी शताब्दी में कर्णाट राजाओं के उदय से मिथिला में संगीत परंपराओं के साथ साथ लोक कहावतों का युग भी आरंभ होता है । भरत ने नाट्य शास्त्र में कहा है कि - मैं जो कुछ इसमें नहीं लिख पाया हूं , उसे आप लोक से जाने । क्योंकि लोक परंपरा है जो श्रव्य के द्वारा एक से दूसरे तक पहुंचती है । (6)

अतः लोकगाथाओं के वर्णन की परंपरा में लोगो की भूमिका मुख्य होती है ।

मिथिला के संदर्भ में भी लोकगाथाओं का ऐसा ही इतिहास रहा है । यह लोकगाथाएं प्राचीन काल से ही आमजन के स्वभाव क्षेत्र का हिस्सा बनी रहीं है और वर्तमान में भी उतनी ही तर्कसंगत है।

क्षेत्र में प्रचलित मुख्य लोकगाथाएं एवम् उनका इतिहास .

मिथिला के ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करने पर यह निश्चित है कि मिथिला का नामकरण विदेह वंश के राजा निमी के पुत्र मिथि से जुड़ा है । मिथि ने सम्पूर्ण मिथिला भूमि पर अश्वमेघ यज्ञ करवाया अतः प्राचीन समय से ही यह भूमि अति पावन मानी गयी है । मैथिली भूमि में प्रचलित प्राचीन एतिहासिक लोक गाथाएं एवम् उनमें वर्णित इतिहास का अध्ययन निमनवत है.

लौरिकी

मिथिला भूमि में प्रचलित लोरिक लोकगाथा को अति प्राचीन माना गया है जिसमें प्राचीन मिथिला की सीमाओं का वर्णन मिलता है। इसे लोरिकायन भी कहा गया है। यह एक वृहद गीत गाथा है जिसमें वीर रस की प्रधानता होती है। इसे मैथिली मगही और भोजपुरी में गाया जाता है।

लौरिकी का संबंध अहीर जाति से था।इस जाति के लोगों में लोरीकी की तुलना रामायण से की जाती है। अतः लोरीकी वर्तमान में भी मिथिला की उपस्थिति का प्रमाण है।

प्रसिद्ध इतिहासकार अलबदायुनी ने भी सन 772 हिजरी के लगभग लोरिक की गाथा का उल्लेख किया है । 14वी सदी के अंतिम दशकों में इसकी रचना का अनुमान लगाया जाता रहा है । अलबदयुनी के उल्लेख में भी इसका नामकरण चंदायन तथा नूरक चंदा के नामो से उद्धत हुआ है ।

लोरिक का उल्लेख करते हुए इलियट ने भी इस लोकगाथा को अहीर जाति के प्रामाणिक इतिहास का अभूतपूर्व हिस्सा माना है ।

लोरीक और चंदा की अद्भुत गाथा आज भी जीवंत है वीर लौकिक पत्थरों के रूप में।

अतः लोरिकी का अध्ययन इस बात की ओर संकेत करता है कि यह गाथा अगोरी किले के राजा मोलगत के साम्राज्य के अन्तर्गत घटित एक जीवंत कथा है । वर्तमान ने यह ऐतिहासिक अघोरी किला तथा वीर लौकिक पत्थर उत्तरप्रदेश की मारकुंडी पहाड़ी पर राबर्ट्सगंज से लगभग 5 किलोमीटर दूर स्थित है जो कि प्राचीन मिथिला की सीमा के अन्तर्गत आता था ।

सलहेस

सलहेस लोकगाथाओं में भी प्राचीन मिथिला का उल्लेख मिलता है। यह गाथा प्रेम रस और वीर रस से भरी हुई है।

इस गाथा में चुहड़मल्ल तथा सलहेस के मध्य मल्लयुद्ध का भी विवरण सुनने को मिलता है ।

फ्रांसिस बुकानन द्वारा उद्धत कुछ कथाओं में राजा सलहेस को मौरंग का डाकू बताया गया है।

इनकी तुलना तिरुपति बालाजी से की जाती है जो साहसी लुटेरों के देवता के रूप में प्रसिद्ध हैं।

प्रो० राधाकृष्ण चौधरी लिखित " mithila in the age of Vidyapati " में राजा सल्हेश की पूजा का और उनके गीत और गाथाओं पर आधारित नृत्यों का उल्लेख मिलता है स्पस्ट है की राजा सल्हेश की पूजा की परम्परा बहुत प्राचीन है

अंग्रेज़ प्रशासक एवं विद्वान ग्रियर्सन द्वारा वर्ष 1982 में इसका प्रकाशन पहली बार करवाया गया। डॉ ग्रियर्सन ने 1881 में ष्एन इंट्रोडक्शन टूट द मैथिली लिटरेचर ऑफ नॉर्थ बिहारए कृष्टोमैथी एंड वोकेबुलरी नामक पुस्तक में राजा सलहेस की गाथा को ष्अथ गीत राजा सलहेसकष् शीर्षक के रूप में 21 खंडो में विभाजित किया है । जिसका प्रथम खंड तथा इक्कीसवा खंड निमनवत है ।

खंड.1- भेल भिनसरवाठाढ़ि दरबाजा गै मालिनी कर जोरि मनती करै छथि देव मुनिक नामए सुनु इन्दासन छपन कोटि देवता जे इन्द्र जनम देलैन्हि छठि राति सोइरीघर में ताहि दिन लिखि देल सलहेस सन बर। हुनक कारण अचरा बान्हलि पर पुरुष मुंह नहि देखलिए जनम पाए सिन्दुर नहि पेन्हलि। हुनि स्वामीक कारण कांच बांसक कोहवर बान्हलिए रचि रचि लाली पलंग सेज झारि ओछाओलिए हुनका कारण। सिकिया चीरि बेनिया बनाओलि स्वामी कारण। गौरी आओत ना।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

खंड.21 में सलहेस सिरकी तजि देलए लाबै गेल अपना भाई मोतीराम ओ भगिना कारीकन्तुए सात सौ हाथी मकुना लै आबि के सिरकी घेरल। ता मे नटनिया पलंग ओछाए देलिए ताहिपर चुहड़मल कै तेल फुलैल दै सुताए देलि। ता मे फरीछ भेलए जुमल सलहेस सभ लसकर लैए धरि लेल सिरकी बीचमे चुहड़मल सूतल। देवी असावरी देलि जगाए जे त्रिआ कारन मुदै तोर जुमल सलहेस। एतबा कहैत चिहाए दोहरि काछ लगाए भै गेल ठाढ़ए छुड़ी लेल हथवाए एक बेरि छरपल चुहड़मल उपर उड़ि गेल सौ पचास हाथए खसल हाथिक हलकाक बाहरए लड़े लागल सलहेस सं। चुहड़मल जहिना पैसे बकरी में हुड़ारए तहिना छरपल फिरे चुहड़मलए जेम्हर छरपै तेम्हर हाथी कटिते जाएस सात सै मकुना कै एकदम सों काटि देलए तीनि राति दिन परल लड़ाइए तखन तीनू बापूतके खेहारने फिरै परतीक खेत मे। उठलि नटिनए पकड़लि चूहड़मलक बांहिए हम जातिक कसबीनए हमरा लग कतेक मोसाफिर अबैथ अछिए तकरा सभ सौं लड़ने हमर रोज हरज होइत अछिए खीस तेजि दहए चलह सिरकी मे मन पुराए देब। चुहड़मल सिरकी मे आवि कै पलंग पर रहल सूति। नीन्द अहिद्रा राखि देलए चाल कैलि राजा सलहेस के और मोतीराम कैं आवि कै अप्पन मुदै बान्हू।

दीना भद्री की गाथा

ग्रियर्सन द्वारा 1885 में प्रकाशित यह गाथा भी दीना और भद्री दो भाइयों की ऐतिहासिक गाथा है जिसमें मिथिलांचल के कुछ अंश देखने सुनने को मिलते है । यह लोकगाथा मिथिला की मुशहर जाति में सर्वाधिक प्रचलित गाथा मानी जाती है ।

कहा जाता है कि दीना भद्री ने मिथिलांचल के सिंघेश्वर मंदिर की पवित्रता भंग करने आए अघोरी बाबा को भी परास्त कर दिया था । कनक सिंह के साथ युद्ध में दोनों भाइयों के मारे जाने से जुड़ी यह गया मिथिला को ऐतिहासिकता के पक्के प्रमाण हैं । (10)

नूनाचार

राजा करनू द्वारा ज्योतिशियो की बातो में आकर अपने दामाद की हत्या पर आधारित यह लोकगाथा भी मिथिला की लोकप्रिय एवं ऐतिहासिक गाथा है ।

निष्कर्ष

अतः यह स्पष्ट है कि मिथिला या मिथिलांचल का स्वरूप प्राचीन काल से ही अपनी लोक गाथाओं के रूप में वर्णित किया जाता रहा है ।रामायण काल से आधुनिक युगीन शोध एवम् अनुसंधान का विषय क्षेत्र बनी मिथिला भूमि अपने जनमानस तक पहुंचते पहुंचते कई स्तरों से गुजरी है । प्रत्येक स्तर पर अमूल चूल परिवर्तनों की श्रृंखला ने इसके इतिहास को अपरिवर्तित बना दिया है ।

संदर्भ सूची

1. डॉ कांशीराम आत्रेय, मंडियाली लोक गीत और लोकगाथाएं पृष्ट 86
2. डॉ सत्यव्रत सिन्हा , भोजपुरी लोक गाथाएं पृष्ठ 54
3. वाल्मीकि रामायण 1,71,3
4. पुराण 88,7.8
5. विष्णु पुराण 4, 5, 1
6. भोजपुरी संस्कार गीत और प्रसार माध्यम पृष्ठ .19
7. मैथिली थ्रू द एजेज
8. डॉ सुभद्र झा , फार्मेशन ऑफ मैथिली लेंगवेज
10 ग्रियर्सन , भाषा और साहित्य चिंतन पृष्ठ 106